ST.ALOYSIUS' COLLEGE,
Ahilya Bai Marg,
Pentinaka chowk, Sadar
Cantt. JABALPUR
Ph- (0761)2620738, 2624631

VOLUME - 3
ISSUE - 1
June - 2018

ISSN No. : 2456-2424

EMERGING RESEARCH JOURNAL

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

JABALPUR PUBLIC COLLEGE
RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION
49, KARMETA, PATAN ROAD, JABALPUR (M.P.)
E-mail : erj.jpc@gmail.com
Website : www.erjjpc.org.in, www.jpc.org.in

8. श्रीमती सुषमा पिल्ले / डॉ. पी.एल. मिश्रा 38–42
उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

9. **Thomas Chandy / Dr. Urmila Verma** 43-47
A Study of the Effect of Emotional Intelligence on Academic Achievement of Senior Secondary School Students

10. **Dr. Nimmi Maria Oommen** 48-51
Institutional Planning : Valuable Insights

11. **Dr. Preeti S.Pendharkar** 52-58
Occupational Stress Among Teachers And Their Adjustment

12. **Dr. Gayatree Goswamee** 59-61
Women Empowerment Through Education

13. **Ms. Dzüvimeno Iralu Yaden / Dr. Bendangyapangla** 62-68
Problems Affecting Learning of Chemistry Among Secondary School Students

14. **Dr. Urmila Yadav** 69-74
Gender Equality & Women Empowerment

15. **Dr. Nivedita Paul** 75-78
Brain Based Learning in Teacher Education

ललित कला / Fine Art

16. श्रीमति कीर्ति मिश्रा 79–83
भारत में चित्रकला का इतिहास

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

*श्रीमती सुषमा पिल्ले**
*डॉ. पी.एल. मिश्रा***

शोध सार

*समाजीकरण की प्रक्रिया समाज की गत्यात्मक निरन्तर परिवर्तनशीलता में जीवनमूल्यों का जन्म, अर्जन, रोपड़, संरक्षण व विकास को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित करती है जो युग बीत चुका होता है उस युग के सामाजिक मूल्य व मान्यताएं नये युग में पुराने साबित हो जाते है और नये युग का श्री गणेश एक बार पुन: व्यक्ति व समाज की मूल्य व मान्यताओं में अभूतपूर्व परिवर्तन कर नये सामाजिक मूल्यों को पुन: स्थापित करते है। सामाजिक बुद्धि व्यक्ति की व्यक्तिगत व सामाजिक जागरूकता का संयुक्त मापन होती है जो सामान्य रूप से व्यक्ति का अपने समूहों में किसी विशेष सामाजिक परिस्थितियों में उसके प्रभावपूर्ण ढ़ंग से व्यवहार करने की उसकी क्षमता होती है। जो उसके अपने साथी समूह या वरिष्ठों के साथ व्यवहारिक समायोजन व सामंजस्य बनाने की क्षमता के साथ ही उसकी व्यवहारिक कुशलता के रूप में प्रदर्शित होती है। किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा, सामाजिक दुनिया के बारे में संग्रहित ज्ञान ही सामाजिक बुद्धि है। **केन्टोर एवं किहीस्ट्रोम (1987)** सामाजिक बुद्धि युक्त व्यक्ति विपरीत परिस्थतियों में अधिक आत्मविश्वासी हो संतुलित व्यवहार करते हैं सामाजिक परिस्थितियों से समायोजन करने के लिए यही लब्धि व्यक्ति को प्रेरित करती हैं जिससे व्यक्ति दूसरों की भावनाओं व मंतव्यों को बेहतर तरीके से समझता है और प्रभावी अंत:क्रियाओं के माध्यम से अलग तरह की अभिवृत्ति, रूचि, आशायें, इच्छायें, उम्मीदें रखता है। जिससे उसकी सारी शक्ति सकारात्मक कार्य में लगती है और वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सामाजिक अराजकता को विराम प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध कार्य का **उद्देश्य** शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिये **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। **न्यादर्श** के रूप में 800 (400 छात्र + 400 छात्राओं) को लिया गया है। **निष्कर्ष** से ज्ञात होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।*

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों के माध्यम से ही संभव हो पाता है। और एक अच्छे नागरिक की पहचान ही यह होती है कि वह अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और निष्ठा, आपसी सद्भाव अनुशासन और स्थापित सामाजिक नियमों मानदण्डों के अनुसार आचरण करें जिससे उसमें नागरिकता की भावना सही अर्थों में विकसित हो सकें, और वह अपनी पूर्ण क्षमता के साथ अपने मजबूत हाथों में देश की बागडोर को ले सके। इसकी पूर्ति के लिए प्रत्येक राष्ट्र की यह राष्ट्रीय आवश्यकता बन जाती है कि वह अपने देश की युवाशक्ति में सकारात्मक ऊर्जा के संचार हेतु एवं देश की सामाजिक – सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति व समय की चुनौतियों का सामना करने के विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली

* रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा संकाय, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
** प्राचार्य (सेवानिवृत), शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

विकसित करें, क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है ताकि वो अपने सामाजिक दायित्वों का पालन सफलतापूर्वक कर सकें।

शिक्षा एक प्रतिपादन है जिसका मूर्तरूप शिक्षक जो समाज की हर सत्ता से इसीलिए ऊपर हैं क्योंकि बालक उसे अपना आदर्श मान उससे ही संस्कारों और समाजीकरण की शिक्षा का अर्थ समझकर उसको ग्रहणकर जीवन व्यवहार में उसका अनुकरण करता है। व्यक्ति व समाज परस्पर साधन व साध्य दोनों है। अत: इनमें अन्योन्याश्रय संबंध पाया जाता है। **राधा कमल मुखर्जी** के अनुसार ''मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है जिनका अन्तरीकरण सीखने, समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है।''

सामाजिक बुद्धि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के सामाजिक अन्तवैयक्तिक, अन्तर्व्यवहारिक, अन्तर क्रियाओं के समायोजन से संबंधित होती है जो व्यक्ति को व्यवहारिक कौशल क्षमता प्रदान कर उसकी चारित्रिक गुणों की निपुणता पर जोर देती है। जिससे व्यक्ति की व्यवहारिक समायोजित कार्य निष्पादन की योग्यता का पता चलता हैं। सामाजिक बुद्धि सम्प्रत्यय को **ई.एल. थार्नडाइक** (1920) ने सर्वप्रथम न केवल बताया अपितु विशद् अध्ययन कर पाया कि व्यक्ति के **आत्म (Self)** का विकास 'परस्पर व्यवहार' के माध्यम से कर मनुष्य को समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक प्राणी यही लब्धि बनाती है और इसके पीछे व्यक्ति के **स्वयं (Self)** में कार्य करने वाली लब्धि व्यक्ति को समाज से संबंध बनाने की योग्यता प्रदान कर उसमें 'समायोजन क्षमता' उत्पन्न व विकसित करती है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में व्यवहारिक कौशल क्षमता आती है जिससे बालक की सामाजिकता को बल प्राप्त होता है। आपने बताया यह बुद्धि व्यक्ति की सामाजिक अन्त:क्रियाओं और समायोजित संवेगात्मक मूल प्रवृत्तियों से संबंधित वह बुद्धि है जो समाज के अंतर्गत 'सामाजिक दशाओं के अनुसार सामाजिक पर्यावरण में व्यक्ति को समुचित व्यवहार करने की प्रेरणा देती है' अत: एक ओर यह लब्धि व्यक्ति की सामाजिक अन्तर्व्यवहारिक कुशलता को संबल प्रदान करती है तो दूसरी ओर समाज में व्यक्ति के अन्तरवैयक्तिक संबंधों की निपुणता पर जोर देती है क्योंकि इस बुद्धि का व्यक्ति की संवेगात्मक लब्धि व व्यवहार समायोजन संबंधी संज्ञान से उच्च धनात्मक सह संबंध पाया जाता है।

निकोसे, आर.एल. (2010) ने 'भावी शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया' परिणाम स्वरूप पुरुष एवं महिला छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। पुरुष छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि महिलाओं छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अधिक थी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि शहरी छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अधिक थी। **सेमबियान, आर एवं विश्वनाथन जी.** (2012) ने 'महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर' कार्य किया परिणामों में पाया कि विभिन्न क्षेत्रों के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन लिंग एवं संस्था के प्रकार से संबंधित महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर है। **सक्सेना, डॉ. सुमनलता एवं जैन, डॉ. रजत कुमार,** (2013) ने 'लिंग एवं विषयधारा के संबंध में स्नातक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन' किया परिणामों से स्पष्ट हुआ कि लिंग के आधार पर प्राप्त विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है कला संकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है।

अपने अध्ययन में सामाजिक बुद्धि विषय पर **नैनसी केनहर एवं जॉन किस्ट्रोम** ने उस अवधारणा को व्यक्त किया जो व्यक्ति अक्सर अपने सामाजिक संबंधों में अनुमान लगाते है- मैं किस परिस्थति में हूँ ? और यह व्यक्ति किस प्रकार का है- जो मुझे बात कह रहा है ? और वह नियम जिनसे वे अनुमान लगाते हैं जैसे - उसका इससे क्या मतलब है? और उसका उपाय - मैं अब इस बारे में क्या करने जा रहा हूँ ? **सोरेन्सन (Sorenson)** ने इस लब्धि को अपने साथ और दूसरों के साथ भली-भाँति चले-चलने (समायोजित करने) की बढ़ती हुई योग्यता बताया। **फ्रीमैंन एवं शौवल (Freeman and**

Showel) ने सामाजिक बुद्धि को 'समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करना बताया। **श्रीमती हरलॉक, सेमुअल स्माइल्स, बोनहेम, वेलेन्टाइन डमविले, मक्डूगल** आदि मनोवैज्ञानिकों व दर्शन सामाजिक शास्त्रियों ने सामाजिक बुद्धि पद को केन्द्र में रखकर इसके अर्थ को सामाजिक विकास व चरित्रिक निर्माण के रूप में स्पष्ट किया।

''सामाजिक बुद्धि स्वयं एवं समाज जागरूकता के विषय में एक संचित माप है जो जटिल सामाजिक परिवर्तनों को संभालने के लिए सामाजिक विश्वास, ढ़ंग, क्षमता, और इच्छा को विकसित करता है।'' - **रॉस इनीविल**

सामाजिक बुद्धि को अनेक कारक प्रभावित करते हैं एवं कारकों की तीव्रता यह सुनिश्चित करती है कि कारकों का सामाजिक बुद्धि पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान में सामाजिक बुद्धि को शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की पाठ्यवस्तु संबंधी जागरूकता भी प्रभावित करती है सामान्य रूप से शिक्षकों को अब वैज्ञानिक तकनीकी युग में पुरानी परिपाटी से पाठ्यवस्तु संबंधी ज्ञान प्रदान करने पर उतना अधिक ध्यान न देकर वर्तमान में उपयोगी संज्ञान के प्रति जागरूकता रखते हुए पाठ्यवस्तु संबंधी मूल्यों पर ध्यान देना चाहिए। सामाजिक बुद्धि निश्चित रूप से व्यक्ति संबंधी सामाजिक व्यवहार की सफलता की भविष्यवाणी में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस बुद्धि का प्रशिक्षण देकर हम बालक को सामाजिक रूप से परिपक्व बना सकते है, जिससे उसमें सामाजिक व्यवहारिक समायोजन क्षमता का विकास होगा और वह भविष्य में सशक्त प्रभावशाली नागरिक के रूप में देश की प्रगति में एक अहम भूमिका अदा कर पायेगा क्योंकि इस लब्धि का व्यक्ति के कार्य व्यापार क्षेत्र एवं व्यावसायिक जीवन की सफलता में लगभग 80 प्रतिशत का योगदान रहता हैं जो विभिन्न अनुसंधान परिणामों से स्पष्ट होता है। सामाजिक लब्धि सम्प्रत्यय की सराहना मात्र इसलिए नहीं की जा सकती कि यह एक नवीनतम सम्प्रत्यय हैं अपितु यह बुद्धि व्यक्ति के सम्मुख यह आदर्श प्रस्तुत करती है कि कैसे वह अपने आप को समाज में सशक्त, खुशहाल व प्रभावी बनाये रख सकता है। वर्तमान अनुसंधान में मूल्यों संबंधी शिक्षिकाओं की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

उद्देश्य :- शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना: शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्रओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर-

स्वतंत्र चर - मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता

परतंत्र चर - सामाजिक बुद्धि

नियंत्रित चर - कक्षा 9वीं एवं आयु 12-14 वर्ष के छात्र

न्यादर्श -

न्यादर्श में विद्यालयों की सूची में से हिन्दी विषय को पढ़ाने वाली 43 शिक्षिकाओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। इन शिक्षिकाओं पर शोधार्थी द्वारा स्वानिर्मित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन एवं फलांकन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षिकाओं का चयन किया गया। ये शिक्षिकाएँ जिन कक्षाओं में अध्यापनकार्य कर रही थी उनके विद्यार्थियों को निम्नानुसार न्यादर्श में चयनित किया गया -

तलिका क्रमांक - 01

न्यादर्श तालिका

शिक्षक जागरूकता स्तर		संख्या	कुलयोग
छात्र	उच्च	200	400
	निम्न	200	
छात्रा	उच्च	200	400
	निम्न	200	
विद्यार्थी (छात्र / छात्रा)	उच्च	400	800
	निम्न	400	

उपकरण :- सामाजिक बुद्धि मापनी - डॉ. एस. माथुर द्वारा निर्मित।

विधि:- न्यादर्श में चयनित विद्यालयों के शिक्षक / शिक्षिकाओं पर शोधार्थी द्वारा निर्मित पाठ्यवस्तु में समाहित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षक / शिक्षिकाओं के विद्यार्थियों पर सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रशासन किया गया एवं फलांकन के उपरांत परिणामों का विश्लेषण अगली कंडिका में प्रस्तुत किया गया।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या - न्यादर्श से प्राप्त प्रदत्त का सांख्यिकीय विश्लेषण निम्नांकित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका क्रमांक - 02

उच्च एवं निम्न मूल्यों के प्रति जागरूक शिक्षकों के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि के तुलनात्मक परिणाम

जागरूकता स्तर		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
छात्र	उच्च	200	61.92	11.84	3.99	< 0.01
	निम्न	200	66.08	9.38		
छात्रा	उच्च	200	73.50	8.69	9.99	< 0.01
	निम्न	200	64.01	10.10		
विद्यार्थी (छात्र / छात्रा)	उच्च	400	67.71	11.89	3.47	< 0.01
	निम्न	400	65.04	9.80		

स्वतत्रंता के अंश - 398 / 798

0.05 स्तर पर सारणीमान - 1.96 / 1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान - 2.59 / 2.58

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि पाठयवस्तु में समाहित मूल्यों के प्रति शिक्षिकाओं की जागरूकता का छात्र / छात्राओं एवं विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। तीनों समूहों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमंश: - 3.99, 9.99 एवं 3.47 हैं जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। निम्न जागरूकता वाली शिक्षिकाओं के छात्रों की सामाजिक बुद्धि, उच्च जागरूकता वाली शिक्षिकाओं के छात्रों से अधिक है जबकि उच्च जागरूकता वाली शिक्षिकाओं की छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, निम्न जागरूकता वाली शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है। यह परिणाम स्वभाविक प्रतीत होता है क्योंकि सामाजिक बुद्धि का मूल्यों के साथ सहचर्य होता है जो शिक्षक मूल्यों के प्रति जागरूक होगे वे अपने अध्यापन में इससे संबंधित बातों को विषयवस्तु से जोड़ते है जिससे विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविकता एवं समाज में उसकी क्या भूमिका है? इस संबंध में ज्ञान मिलता है जो विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन के विकास में सहायक होता है।

पूर्व अनुसंधानों के परिपेक्ष्य में यदि वर्तमान अनुसंधान कार्य के परिणामों को जोड़ा जाये तो छात्र एवं छात्राओं के परिपेक्ष्य में यह परिणाम सक्सेना, डॉ. सुमनलता एवं जैन, डॉ. रजत कुमार, (2013) के परिणामों के अनुरूप हैं। जिसमें उन्होंने जब लिंग एवं विषयधारा के संबंध में स्नातक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया परिणामों से स्पष्ट हुआ कि लिंग के आधार पर प्राप्त विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है कला संकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है, एक अन्य अनुसंधान में निकोसे, आर.एल. (2010) ने निष्कर्ष स्वरूप पाया कि पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा महिला छात्राध्यापिकाओं एवं ग्रामीण की अपेक्षा शहरी छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि अधिक पायी गयी, सेमबियान, आर एवं विश्वनाथन जी. (2012) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है व कलासंकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है, निम्न शोध परिणामों से जो बात उभर कर आती है, वह यह है कि मूल्यों के प्रति शिक्षिकाओं की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :-

- शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ :-

(1) श्रीवास्तव डी.एन., 'समाज मनोविज्ञान', छठवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. सं. 29

(2) सरीन एण्ड सरीन, 'शैक्षिक अनुसंधान विधियां', नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. सं. 105

(3) कपिल, एच.के. (2005) सांख्यिकीय में मूल तत्व, आगरा (उ.प्र.), विनोद पुस्तक मंदिर, नवीनतम संस्करण, पृ. सं. 258

(4) मंगल, एस.के. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, (हिन्दी), नई दिल्ली, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राईवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, पृ. सं. 176

Journals

- Deepti Hooda "Social Intelligence as a predictor of positive psychological Health", Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, January 2009, Vol. 35, No. 1, pg. 143-150.
- Monalima Dutta, g. Baratha (1998) "Social Adjustment of Adlescents". Indian Psychological Review, Vol. 50, No. 2, pg. 90-94.